गन्धर्वराज पुष्पदंत भगवान शिव की अर्चना के लिये नित्य अदृश्य रुप मे एक राजा के बगीचे मे जाकर सुगन्धित पुष्प तोड़ कर लाते थे। राजा ने काफी छानबीन की, कि पुष्प कौन ले जाता है, परन्तु पता न चल सका। अंत मे यह निष्कर्ष निकला, कि कोई अदृश्य होकर इस उपवन से फूल ले जाता है। इसके समाधान के लिये राजा ने उपवन के चारों ओर **शिव निर्माल्य** फैला दिया, जिससे उसे लांघते ही अदृश्य व्यक्ति की अदृश्यता क्षीण हो जाए और वह दिख जाए। अगले दिन पुष्पदंत ने जैसे ही फूल तोड़ने के लिये **शिव निर्माल्य** को लांघा, वैसे ही मालियों ने उन्हे देख लिया और पकड़ कर राजा के कारागार में डाल दिया।

जब कारागार में पुष्पदंत को पता चला कि उन्होंने भगवान शिव के निर्माल्य को लांघा है, तो उन्हे अपराध बोध हुआ, उन्होंने शिव को प्रसन्न करने के लिये कारागार में ही शिव की उपासना की, जिससे भगवान प्रगट हुए और उन्हें मुक्ति मिली। उन्होंने **पुष्पदंतेश्वर शिवलिंग** की स्थापना की।

पुष्पदंत प्रणीत शिव साधना करने से साधक केसभी कार्य सिद्ध होते हैं, यदि किसी कार्य में कोई रुकावट आ रही हो, तो वह समाप्त हो जाती है – **जैसे संतान का विवाह नहीं हो पा रहा हो, किसी योजना के क्रियान्वित होने में बार-बार विघ्न उपस्थित हो रहे हैं, या किसी भी कार्य को आपने हाथ में लिया हो और आप उसमें पूर्ण सफलता चाहते हो किसी प्रकार की कोई राज्य बाधा या सरकारी बाधा से आपके कार्य रुक रहे हों, कोई धन आपका कहीं अटका हो, आदि।**

इस साधना को **श्रावण मास के किसी भी दिन अथवा किसी भी प्रदोष** से प्रारम्भ किया जा सकता है। उत्तर दिशा की ओर मुख करके गुरु चित्र एवं शिव चित्र का संक्षिप्त पूजन करें। किसी थाली में सुगन्धित पुष्प से स्वास्तिक बना कर उस पर **'तांत्रोक्त रुद्र यंत्र'** को स्थापित करें। यंत्र के चारों दिशाओं मे **'चार पुष्पदंत रुद्राक्ष'** स्थापित करें। यंत्र एवं रुद्राक्ष का कुंकुम, अक्षत, धूप, दीप आदि से पूजन करें। दाहिने हाथ में पुष्प लेकर किस कार्य की पूर्णता के लिये यह साधना कर रहें हैं, उस प्रयोजन को बोलें और फिर उस पुष्प को यंत्र चढ़ा दें। फिर **'पुष्पदंतेश्वर माला'** से निम्न मंत्र की ग्यारह माला जप सांत दिनो तक नित्य करें –

पुष्पदंतेश्वर शिव मंत्र

।। ॐ ह्रीं ह्रौं कार्य सिद्धिं नमः शिवाय ।।

साधना समाप्ति होने के बाद कम से कम एक सप्ताह तक सभी सामग्री को पूजा स्थान में ही रहने दें, फिर बाद में उसे जल में विसर्जित कर दें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. – 460/-